arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:06 PM Page 174

अपने आँसुओं को बहने दे रहे थे। कार्यकर्ताओं के हृदय में भावनिक स्था निर्माण करनेवाले राजनीतिक और सामाजिक नेता का विलक्षण दाहरण इस समय देखने को मिल रहा था। ताई (सुमताताई सु हलीकर) की अनुपस्थिति सबको महसूस हो रही थी। हम नागपुरवा यों को सभी पूछ रहे थे कि ताईजी कैसी है? अस्वस्थता ं कारण उनका दिल्ली पहुँचना संभव नही था। उन्होंने सबके शीर पर स्नेह से हाथ रखकर सबके दुख को कम करने का प्रय किया होता, ऐसा सबको लग रहा था। नान ी के साथ राजनीति मे और बाद मे संस्था के कार्य मे ताई ने कठोर परिश्रम किया था। उनका स्मरण सबको हो रहा था। 30- 2 वर्ष पहले ग्रामीण क्षेत्र के अल्पशिक्षित म्पति श्रीकांत व कुमुद शोध संस्थान में मू त: नौकरी करने के लिए आये थे, लेकिन अ यावधि में ही नानाजी के प्रभाव और आत्मीय ा से शोध संस्थान के समर्पित कार्यकर्ता हो ये। उनकी दो संताने है। अब तो कुमुद को शेता भी है। इस बीच श्रीकांत का देहांत हो या, लेकिन कुमुद दीदी ने जिस तरह से इस ि म्मेदारी को संभाला वह सराहनीय है। नानाजी के पास उद्योगपति, राजनीतिक ने ा, बुध्दिजीवी, ग्रामीण कार्यकर्ता, रिश्तेदार आदि विभिन्न क्षेत्र के लोग आते रहते थे। इन सबक चिंता, आदरातिथ्य उनकी पद्धति से कर ा है। नानाजी का सचिव हेमंत पांडे तो एक या की तरह नानाजी के साथ था। हेमंत अ ंत नानाजी की मूर्तिमंत सेवा। नानाजी रात जग जाते और हेमंत कभी सोया हो, उसे जगाना पड़े, ऐसा कभी नही हुआ। नानाजी करवट भी बदलते तो भी वह जग जाता था इतना सतर्क रहता था। कुमुद और हेमंत जैसे व्यक्ति मिलना यह भी नानाजी की विशेषता ही है। इसीलिए इन दोनों का अप मृत्युपत्र में पुत्री और पुत्र के रूप मे उल्लेख किया है।

वहां पर ाने वाला प्रत्येक व्यक्ति उन दोनों को सांत्वना दे रहा था। नानाजी नके जीवन का ध्येय थे। उन दोनों को कैसे संभाला जाये, यह वह उपस्थित कार्यकर्ताओं के सामने एक प्रश्न था।

नानाजी व सानिध्य प्राप्त प्रत्येक कार्यकर्ताओं के फोन आ रहे थे। एक समय दीनदयाल शोध संस्थान मे रहनेवाली सुचेता पाडीकर जो इस समय सिएटल, अमेरिका मे रहती है, ने फोन पर बताया कि उसने नानाजी के फोटो के सामने दीया जलाया और उसे दस दिन तक प्रज्वलित रखकर ज्ञानेश्वरी का पाठ करेंगी। अमेरिका मे ही हेमा चिटणीस अपनी तरफ से नानाजी के पार्थिव पर फुल अर्पित करने के लिए और प्रणाम को कह रही थी। सभी बड़े व्यक्तियों के रिश्तेदार होते है, नानाजी ने उनमे से अनेको को देशभक्ति की दीक्षा दी। यह उनकी विशेषता ही थी। नानाजी ने अपने नाते रिश्तों का जतन किया। वे सब पहुंचे थे। नानाजी के नही रहने से उनके जीवन मे एक रिक्तता निर्माण हुई थी। नानाजी के रिश्तेदारों के संस्थान के कार्यकर्ताओं के साथ संबंध जुड़ गये थे। दुख की अनुभूति सभी को एक समान थी। अब इस भवन के साथ अपना रिश्ता कही खत्म तो नही होगा, दुख के साथ यह आशंका जुड़ी थी। लेकिन महेश शर्मा, यादवराव, अभय महाजन, भैया साहब मुंडले सभी को आश्वस्त कर रहे थे और सभी रिश्तेदारों को सांत्वना भी दे रहे थे।

> **पद प्रतिष्ठा और पुरस्कारों के आगे जाकर रचनात्मक जीवन का मानदंड नानाजी ने प्रस्थापित किया था। युवाओं के समक्ष, अंतिम क्षण तक सक्रिय रहने का आदर्श प्रस्थापित किया है। 76वे वर्ष में चित्रकूट के कार्य का श्रीगणेश कर उसे सफल बनाने का विक्रम स्थापित किया।**

प्रवेश द्वार के भीतर दीनदयालजी की प्रतिमा के सामने नानाजी के पार्थिव शरीर को करीब-करीब आधा घंटा रखा गया। पूर्व राष्ट्रपति डा० कलाम ने यहीं पर नानाजी को श्रध्दांजलि दी। उसके बाद केशवकुंज संघ कार्यालय में पार्थिव शरीर को अन्त्यदर्शन के लिए रखा गया। वहां दधीचि देहदान समिति के अध्यक्ष आलोक कुमार ने नानाजी के देहदान संबंधी जानकारी से सबको अवगत कराया। उनकी उपस्थिति में ही मृत्युपत्र तैयार किया गया था। उसे सुनते हुए हजारो लोगो की आँखे नम हो गई थी। पद प्रतिष्ठा और पुरस्कारों के आगे जाकर रचनात्मक जीवन का मानदंड नानाजी ने प्रस्थापित किया था। युवाओं के समक्ष, अंतिम क्षण तक सक्रिय रहने का आदर्श प्रस्थापित किया है। 76वें वर्ष में चित्रकूट के कार्य का श्रीगणेश कर उसे सफल बनाने का विक्रम स्थापित किया। दीनदयाल शोध संस्थान का भवन अब इस प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के जीवंत स्मरणशिल्प के रूप में है। यह संकल्प कर उस भवन ने नानाजी को अंतिम प्रणाम किया। ■

नानाजी को चित्रकूट के ग्रामोदय विश्वविद्यालय में मानद डाक्टरेट प्रदान करते मध्य प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल डा.बलराम जाखड़